श्रीमद्भगवद्गीता में निहित योग-दर्शन के शैक्षिक निहितार्थों की ज्ञानार्जन, धारण एवं स्थानान्तरण प्रक्रिया के सन्दर्भ में समसामयिक प्रासंगिकता

पी-एच.डी. (शिक्षाशास्त्र)

उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोधार्थी

सत्य नरायन यादव

शोध निर्देशक

प्रोफे० पहुप सिंह त्यागी

डिपार्टमेंट ऑफ फाउन्डेशन ऑफ एजुकेशन, शिक्षा संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा– 282005

2021

प्रस्तावना–

''श्रीमद्भगवद्गीता का कालजयी सन्देश केवल एक ऐतिहासिक युद्ध से ही संबंधित नहीं, अपितु अच्छाई और बुराई के बीच ब्रह्मांण्डीय संघर्ष का उल्लेख भी करता हैः- जीवन-परमात्मा और जड़-पदार्थ, आत्मा और शरीर, जीवन और मृत्यु, ज्ञान और अज्ञान, स्वास्थ्य और रोग, अपरिवर्तनशीलता और क्षणभंगुरता, आत्म-नियंत्रण और प्रलोभन, विवेक-शक्ति और अंधे इंद्रियमन-के बीच युद्धों की एक श्रृंखला के रूप में।'' श्री श्री परमहंस योगानन्द, श्री श्री पी. वाई. (2018).।

विश्व परिप्रेक्ष्य में आज मानव की वर्तमान स्थिति कल्याणकारी न होकर स्वार्थ मूलक बनती चली जा रही है, आज विश्व एक ऐसे बारूद के ढेर पर स्थित है, जिसमें विनाश की सम्भावना से कदापि अस्वीकृति नहीं की जा सकती है, ''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया'' के भाव से ओतप्रोत भारतीय संस्कृति के उन मूल शान्ति मूलक बिन्दुओं को हृदयांगम करने की आवश्यकता है जो इस विश्व को उक्त भयावह स्थिति से बचाकर कल्याणकारी स्थिति में ले जा सके। प्राचीन विश्व-गुरू–भारत की ओर यह विश्व पुनः देख रहा है और प्राचीन भारतीय संस्कृति के उन्हीं तत्वों को ग्रहण करने का प्रयास कर रहा है। उनमें से एक है योग, जिसे आज विश्व के अधिसंख्य लोगों ने स्वीकार किया है। योग व्यक्ति की ज्ञानार्जन क्षमता को तो बढ़ाता ही है, जिसके प्राचीन भारतीय साहित्य में अनेकानेक उदाहरण उपलब्ध हैं, साथ ही ज्ञान की धारण क्षमता को भी बढ़ाने का एक सशक्त माध्यम है। यद्यपि योग का इतिहास भारत में प्राचीन है, किन्तु आध्यात्मिक के साथ–साथ भौतिक दृष्टि से भी श्रीमद्भगवद्गीता का योगसिद्धान्त एक अमूल्य सूत्र है, जिसमें ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग और ध्यानयोग को समावेशित किया गया है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है और कला किसी राष्ट्र के मन को प्रकट करती है। किसी सभ्यता का साहित्य उसकी संस्कृति का सूक्ष्म संकेत होता है। भारत ने साहित्य में अपनी अत्यधिक विकसित एवं गौरवशाली स्वर्ण-युगीन सभ्यता को संरक्षित रखा है। श्रीमद्भगवद्गीता की रचना मात्र इसका अलंकार, अनुप्रास, शब्द-चयन, शैली तथा सामंजस्य– यह दर्शाते हैं कि भारत प्राचीन काल से ही बौद्धिक और भौतिक विकास की अवस्थाओं को पार करके आध्यात्मिकता के उच्च शिखर पर पहुंच चुका था।

श्रीमद्भगवद्गीता जो महाभारत के भीष्मपर्व का एक भाग है, संस्कृत साहित्य का भी एक अत्यन्त लोकप्रिय साहित्य है। **यह सबसे अधिक सुन्दर और यथार्थ अर्थो में सम्भवतः एक मात्र दार्शनिक गीत है जो किसी ज्ञात भाषा में लिखा गया है,** राधाकृष्णन. (2017)। यही एक ऐसा ग्रंथ है जिसमें दर्शन, धर्म और नीतिशास्त्र का समन्वय हुआ है। श्रीमद्भगवद्गीता का तीन शब्दों से मिलकर बना है, श्रीमद् + भगवद् + गीता। जिसमें श्रीमद् का अर्थ होता है **"सुन्दर",** भगवद् का अर्थ होता है **"परमात्मा"** और गीता का अर्थ होता है **"गीत"** अर्थात **परमात्मा का एक सुन्दर गीत।** श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय विचारधारा में सबसे अधिक प्रभावशाली ग्रंथ है।

श्रीमद्भगवद्गीता हमारे धर्म ग्रंथों का एक अत्यंत तेजस्वी और निर्मल हीरा है। पिंड–ब्रह्मांड–ज्ञान सहित आत्मविद्या के गूढ़ और पवित्र तत्वों को थोड़े में और स्पष्ट रीति से समझा देने वाला, उन्ही तत्वों के आधार पर मनुष्य मात्र के पुरुषार्थ की अर्थात् आध्यात्मिक पूर्णावस्था की पहचान करा देने वाला, भक्ति और ज्ञान का मेल कराके इन दोनों का शास्त्रोक्त व्यवहार के साथ संयोग करा देने वाला और इसके द्वारा संसार से त्रस्त मनुष्य को शांति देकर उसे निष्काम कर्तव्य के आचरण में लगाने वाला श्रीमद्भगवद्गीता के समान बालबोध ग्रंथ संस्कृत ही नहीं अपितु संसार के समस्त साहित्य में भी नहीं मिल सकता। केवल काव्य की दृष्टि से यदि इसकी समीक्षा की जाए तो भी यह ग्रंथ उत्तम काव्यो में गिना जा सकता है क्योंकि इसमें आत्मज्ञान के अनेक गूढ़ सिद्धांत ऐसी प्रासादिक भाषा में लिखे गए हैं कि वे बूढ़ों और बच्चों के लिए एक समान सुगम है, और इसमें ज्ञानयुक्त भक्ति रस भी भरा पड़ा है जिसमें समस्त वैदिक धर्म का सार स्वयं श्रीकृष्ण भगवान की वाणी से संग्रहीत किया गया है।

अनुसन्धान कार्य सुनियोजित, उद्देश्यपूर्ण एवं वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की जाती है। भारत प्राचीन काल से ही शिक्षा का केंद्र बिंदु रहा है और वर्तमान समय में शिक्षा के भौतिक स्वरूप में, संचार साधनों, वैज्ञानिक आविष्कारों आदि की उन्नति से बहुत अधिक परिवर्तन हुआ है किंतु आध्यात्मिक क्षेत्र में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं हुआ है। मानव मस्तिष्क के इतिहास में भारतीय विचारधारा अपना एक अत्यंत शक्तिशाली और भावपूर्ण स्थान रखती है और शिक्षा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित

करती है इसलिए शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे वर्तमान एवं भविष्य की हमारी नैतिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक दिशाओं को ध्यान में रखते हुए अतीत का सर्वोत्कृष्ट उपयोग कर वर्तमान को सर्वोत्कृष्ट बनाया जा सके।

यह सत्य है कि कोई भी देश अपनी शिक्षा प्रणाली से पूरी तरह संतुष्ट नहीं है और उसमें आवश्यक सुधार एवं परिवर्तन की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है वर्तमान समय में भारत ऐसे संक्रमण काल से गुजर रहा है जहां पुरानी मान्यतायें आधुनिकता की चकाचौंध में तेजी से बिखर रही है। बदलती परिस्थितियों के अनुरूप नवीन मूल्यों का निर्माण नहीं हो पा रहा है और न ही पुराने मूल्यों को उचित न्याय मिल पा रहा है, आवश्यकता इस बात की है कि ऐसे प्रयोजनवादी दर्शन का अभाव है जो शिक्षा को गतिशील, आत्मनिर्भर एवं आध्यात्मिकता के शिखर पर ले जा सके। श्रीमद्भगवद्गीता का योगदर्शन इसी को आधार प्रदान करता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन में निहित मूल्यों को शैक्षिक प्रक्रिया में सम्मिलित कर उसे प्रायोगिक बनाया जाये जिससे शिक्षार्थी द्वारा प्राप्त ज्ञान एवं कौशल उसके जीवन को उत्कृष्टता प्रदान कर सकें।

श्रीमद्भगवद्गीता का योगदर्शन–

'योग' शब्द 'युज' धातु से निर्मित है जिसका अर्थ जोड़, मेल, एकत्व आदि से है। स्वयं भगवान ने 'योग' शब्द की निश्चित और स्वतंत्र व्याख्या की है। **''योगः कर्मसु कौशलम् अर्थात कर्म करने की एक प्रकार की विशेष युक्ति को योग कहते हैं''** स्वामी पी. (1983)। श्रीमद्भगवद्गीता की दार्शनिक पृष्ठभूमि उपनिषदों से ली गई है, जिसमें श्रीमद्भगवद्गीता का प्रयत्न एक ऐसे धार्मिक संश्लेषण की ओर है जो मनुष्यों के जीवन और आचार को उपनिषदो द्वारा प्रतिपादित तथ्यों के आधार पर सहारा दे सके, और जिसे भारतीय जनता के नैतिक जीवन में प्रविष्ट किया जा सके। श्रीमद्भगवद्गीता के योगसिद्धान्त में ज्ञान की महती भूमिका है। श्रीमद्भगवद्गीता में योग के चार रूपों को निरुपित किया गया है जो अधोलिखित रेखाचित्र द्वारा सुस्पष्ट है–

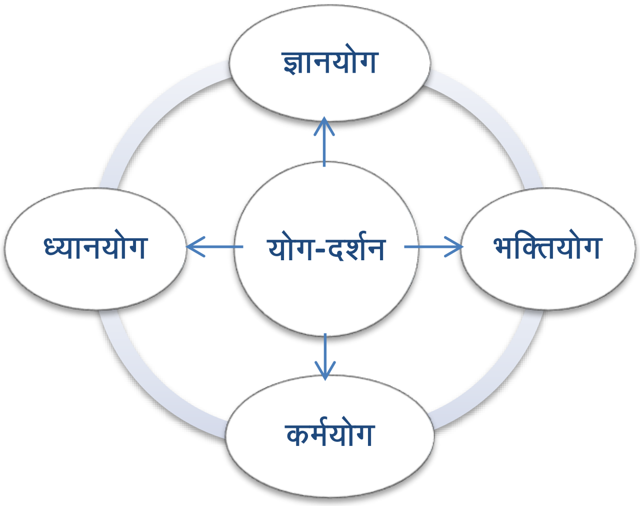

चित्र संख्या 01

योगस्थः कुरु कर्माणि संगम् त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध-असिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्चते।। गीता अ.2 श्लोक 48.।।

हे अर्जुन! जय अथवा पराजय की समस्त आसक्ति त्याग कर समभाव से अपना कर्म करो। ऐसी समता योग कहलाती है। **"ज्ञान भक्तियुक्त कर्मयोग ही गीता का सार है"** तिलक (2018)। ज्ञान के बिना योग शारीरिक और मानसिक व्यायाम मात्र है। ज्ञान से ही परम शांति मिलती है, ज्ञान के समान पवित्र और कुछ भी नहीं है। विभिन्न विषयों की यथार्थता का ज्ञान भी वर्तमान में ज्ञानयोग कहा जा सकता है। इसी को श्रीमद्भगवद्गीता की ज्ञान मीमांसा कहा जा सकता है। जिसमें ज्ञान का स्वरूप, ज्ञान प्राप्ति की विधियाँ एवं साधनों का समावेश होता है।

श्रेयो हि ज्ञानम् अभ्यासात् ज्ञानात् ध्यानम् विशिष्यते। गीता अ.12 श्लोक 12.।।

यदि तुम अभ्यास नहीं कर सकते, तो ज्ञान के अनुशीलन में लग जाओ। लेकिन ज्ञान से श्रेष्ठ ध्यान है और ध्यान से भी श्रेष्ठ है कर्मफलो का त्याग, क्योंकि ऐसे त्याग से मनुष्य को मनःशान्ति प्राप्त हो सकती है। मानव समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ है तो मात्र ज्ञान के कारण अर्थात ज्ञान प्राप्ति मानव शरीर द्वारा सम्भव है।

ज्ञानविज्ञान तृप्त आत्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः।
युक्त इत्युच्चते योगी समलोष्ट्र अश्म कांचनः।। गीता अ. 06 श्लोक 08.।।

श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है कि ज्ञान से युक्त व्यक्ति ही आत्मसाक्षात्कार कर सकता है और वही योगी कहलाता है। जो अपने अर्जित ज्ञान तथा अनुभूति से पूर्णतया सन्तुष्ट रहता है। ऐसा व्यक्ति अध्यात्म को प्राप्त तथा जितेन्द्रिय कहलाता है। वह सभी वस्तुओं को एक समान देखता है। ईश्वर के प्रति समर्पित हुए बिना ज्ञानयोग भी अपूर्ण है। श्रीमद्भगवद्गीता के ज्ञान का सार भक्ति है, भक्ति श्रीमद्भगवद्गीता का हृदय है। श्रीमद्भगवद्गीता के उपदेश का प्रारंभ शरणागति से होता है। अर्थात ज्ञान प्राप्त करने वालों के लिए श्रद्धा का होना नितांत आवश्यक है। जब ईश्वर की आराधना भक्ति से की जाती है, तो मन में शुद्धता का विकास और चैतन्य का ज्ञान हो जाता है और सभी भेद–भाव नष्ट हो जाता है। श्रीमद्भगवद्गीता की लोकप्रियता का कारण श्रीमद्भगवद्गीता में प्रतिपादित भक्ति मार्ग को दिया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति जो श्रद्धा भक्ति के साथ किसी कार्य को करता है तो निश्चित ही उसमें आत्मसमर्पण का विशेष लक्षण पाया जाता है।

मयि आवेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते।
श्रद्धया परया उपेता ते मे युक्ततमा मताः।। गीता अ.12 श्लोक 2.।।

जो लोग अपने मन को मेरे साकार रूप में एकाग्र करते हैं और अत्यन्त श्रद्धापूर्वक मेरे कार्यो में लगे रहते हैं, वे मेरे द्वारा परम सिद्ध माने जाते हैं।

भक्तियुक्त मानव में उत्तम दार्शनिक तत्व तथा मनुष्य की शक्ति का समावेश पाया जाता है। **श्री अरविंद ने ''गीता को भारतीय आध्यात्मिकता का परिपक्व मधुर फल कहा है'' सिन्हा (2018)।** भक्ति योग का सामान्य अर्थ ज्ञान प्रदाता के प्रति पूर्णश्रद्धा भाव है। जब तक ये श्रद्धा/समर्पण नहीं होगा तब तक ज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं है। अतः ज्ञानयोग का आधार भी भक्तियोग है।

कर्म ज्ञान का ईधन है, गीता का निष्काम कर्म ज्ञानी द्वारा ही संपादित हो सकता है। देहधारी प्राणी के लिए कर्मो का सर्वथा त्याग संभव नहीं है। प्रकृति के सत, रज, एवं तम तीनों गुण सभी प्राणियों को विवश करके कर्म कराते हैं। यह पूरा संसार कर्म पर आधारित है। गीता के कर्म योग में प्रवृत्ति एवं निवृत्ति का अद्भुत समन्वय किया है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूमा ते संगः अस्तु अकर्मणि।। गीता अ. 02 श्लोक 47.।।

श्रीमद्भगवद्गीता कर्म का निषेध नहीं करती अपितु कर्म में कामना का निषेध करती है। वासना, कामना, आसक्ति या फलाकांक्षा कर्म का विष-दंत है, जो विषयी को बंधन में बांधता है। इस विष–दंत को निकाल देने पर कर्म में बांधने की शक्ति नहीं रह जाती। कामनायुक्त व्यक्ति जिसको हम वर्तमान में भौतिकवाद के रूप में स्वार्थ की संज्ञा दे सकते है, क्योंकि स्वार्थ से किए हुए कर्म में अवगुणों का समावेशित होना स्वाभाविक है। गीता निरंतर स्वार्थरहित कर्म की प्रेरणा देती है।

वह व्यक्ति जिसने अपने मन को पूर्ण रूप से शान्त कर लिया है तथा अपने आवेगों को नियंत्रित कर लिया है एवं उन्हें सभी दोषों से मुक्त कर लिया है वास्तव में वही ध्यान की श्रेष्ठ अवस्था है। ध्यान इन्द्रिय संयम कर मन को स्थिर रखने की सर्वोत्कृष्ट प्रक्रिया है एवं मन की चंचलता को रोकने का माध्यम है मन की चंचलता में न तो भक्ति भाव हो सकता है और न ही ज्ञान की प्राप्ति तथा विहित कार्य में भी मानव अपने को प्रवृत्त नहीं कर सकता। भक्तियोग पूर्ण आत्मज्ञान है। योग की सर्वोच्च स्थिति केवल भक्तियोग से ही प्राप्ति की जा सकती है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार पर्वतों में हिमालय सबसे ऊँचा है, जिसकी सर्वोच्च चोटी एवरेस्ट है। योग की सीढ़ी जीव की अधम अवस्था से प्रारम्भ होकर आध्यात्मिक जीवन के पूर्ण आत्मसाक्षात्कार तक जाती है और यह सीढ़ी योग कहलाती है, जिसमें ज्ञानयोग, भक्तियोग तथा ध्यानयोग सम्मिलित है और मनुष्य अष्टांगयोग के द्वारा इन्द्रियों को वश में करके सिद्धहस्त हो जाता है। ठीक उसी प्रकार आज के शिक्षार्थीयों को अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित होना चाहिए।

श्रीमद्भगवद्गीता में चारों प्रकार के योग अर्थात ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग एवं ध्यानयोग की पारस्परिक सापेक्षता है बिना ज्ञान के भक्ति, कर्म एवं ध्यान नहीं हो सकते तदैव बिना भक्ति के ज्ञान, कर्म एवं ध्यान प्रक्रिया सम्पन्न नहीं हो सकती। इसी प्रकार ध्यान में भी अन्य तीनों योगों की अपरिहार्यता है। इस दृष्टि से योगी वही हो सकता है जो उपर्युक्त चारों योग साधनों से युक्त हो अतः श्रीमद्भगवद्गीता इन चारों योग साधनों के समावेश की आवश्यकता पर बल देता है।

ज्ञानार्जन, धारण एवं स्थानान्तरण प्रक्रिया–

मनुष्य चिन्तनशील एवं क्रियाशील प्राणी है और यह क्रियाशीलता उसके जन्म से ही नहीं बल्कि मां के गर्भ से ही प्रारंभ हो जाती है। महाभारत में वीर अभिमन्यु ने मां के गर्भ में ही चक्रव्यूह तोड़ने का ज्ञान प्राप्त किया था, यह ज्ञानार्जन का एक प्रत्यक्ष उदाहरण है। ज्ञानार्जन एवं धारण जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। प्रारंभ में शिशु असहाय और पराश्रित होता है किंतु धीरे–धीरे वह अपने वातावरण के अनुकूल समायोजित करने का प्रयत्न करता है इस समायोजन में ज्ञानार्जन व धारण से लाभ उठाने की चेष्टा करता है और उसका प्रयोग वर्तमान तथा भविष्य में करता है।

ज्ञानार्जन धारण एवं स्थानांतरण का परास अत्यंत विस्तृत एवं व्यापक है जो जीवन पर्यंत ही नहीं अपितु एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरण होता रहता है। इसके अंतर्गत व्यवहार के संज्ञानात्मक, भावात्मक, मनोगतिक अनुक्षेत्रों में हुए परिवर्तन शामिल है। जहां ज्ञान एवं आलोचनात्मक चिंतन से संबंधित व्यवहार में होने वाले परिवर्तन को संज्ञानात्मक (cognitive) ज्ञान कहा जाता है, वही रूचियों, अभिवृत्तियों एवं मूल्यों में होने वाली तब्दीली को भावनात्मक (affective) ज्ञान कहा जाता है एवं कार्य कुशलता से संबंधित परिवर्तन को मनोगतिकी (psychomotor) कोटि में रखा गया है। ज्ञान का अर्जन, धारण एवं स्थानान्तरण करने की एक प्रक्रिया है जो अधोलिखित रेखाचित्र द्वारा सुस्पष्ट है–

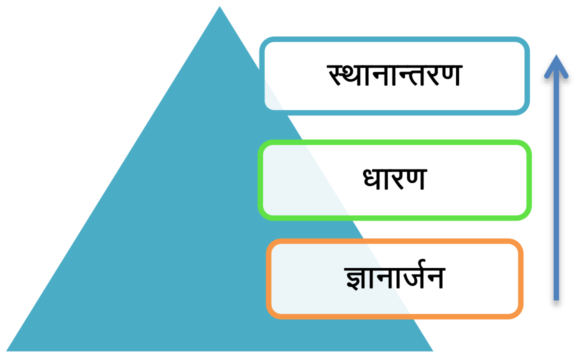

चित्र संख्या– 02 ज्ञान की प्रक्रिया

अब प्रश्न यह उठता है कि हम कैसे सीखते हैं? यह प्रश्न विवादास्पद होते हुए भी बड़ा ही रोचक एवं चुनौतीपूर्ण रहा है। अनेक शिक्षाविदों, विचारको, चिन्तकों एवं वैज्ञानिकों ने अपने ढंग से इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने का प्रयास किया है जहां एक ओर उसमें सिद्धांत एवं विशेष प्रकार का वैचारिक परिवर्तन है तो वहीं दूसरी ओर उन्होंने कुछ प्रयोग विकसित किये है और इन परिवर्तनों का मुख्य कारण शिक्षा है। शिक्षा ऐसे सुशिक्षित योग एवं दायित्व पूर्ण नागरिकों का निर्माण करती है जिससे व्यक्ति शिक्षित होकर समाज की प्रगति एवं उन्नयन में अपना योगदान दे सके। राष्ट्र के नागरिकों को भौतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से समृद्ध बनाना शिक्षा का लक्ष्य होता है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए हमें अनुसंधान की आवश्यकता पड़ती है। जिससे व्यक्ति एवं समाज की आवश्यकताओं, समस्याओं एवं भविष्य में आने वाली चुनौतियों के लिए सामना कर सकें और परिस्थितियों से सामंजस्य बिठा सकें। मनुष्य में अनेक प्रकार की प्रगाढ़ एवं सूक्ष्म प्रवृत्तियॉ होती हैं जैसे आध्यात्मिक, वैचारिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक इत्यादि जिससे मानव सुसंस्कृत और उन्नयनसील बनता हैं। आज आवश्यकता इस बात को जानने की है कि हम वर्तमान में शिक्षा के उद्‌देश्य, पाठ्यक्रम, शैक्षिक प्रक्रिया, परामर्श एवं निर्देशन, विद्यालय का वातावरण, मूल्यांकन प्रणाली किस प्रकार संचालित कर रहे हैं? इन सब का प्रतिफल शिक्षार्थी, शिक्षक, अभिभावक, समाज एवं राष्ट्र पर अवश्य पड़ता है। शिक्षा के सभी स्तरों पर ज्ञानार्जन एवं शिक्षण प्रक्रिया, ज्ञानार्जन एवं धारण प्रक्रिया, ज्ञानार्जन एवं शिक्षा के उद्देश्य, ज्ञानार्जन एवं पाठ्यक्रम, मूल्यांकन प्रणाली निश्चित रूप से शैक्षिक परिवर्तन को प्रभावित करती है और यह परिवर्तन राष्ट्र के नवयुवकों के व्यवहार एवं राष्ट्र के विकास में परिलक्षित होता है और इसके परिलक्षित होने की मुख्य भूमिका में शिक्षार्थी की ज्ञानार्जन प्रक्रिया, धारण प्रक्रिया, एवं उसके ज्ञान के स्थानांतरण प्रक्रिया पर निहित होती है।

शिक्षार्थी का स्थायी अधिगम इस बात पर निर्भर करता है कि उसने किसी विषय वस्तु को सीखने में ज्ञान, ध्यान, भक्ति और कर्म को कितना अधिक महत्व दिया है? शिक्षार्थी एवं शिक्षक यदि अपने कार्य को श्रद्धा भक्ति, उचित ध्यान, ज्ञान एवं कर्म के साथ किया है तो उससे प्रतिफलित अधिगम को शिक्षार्थी एवं शिक्षक अपने प्रयोग क्षेत्र में स्थानान्तरित में अधिक सफल होगे। निःस्वार्थ भक्ति के बिना ध्यान नहीं हो सकता और

उचित ध्यान के बिना कर्म नहीं हो सकता और उचित ज्ञान के बिना ध्यान कर्म और भक्ति नहीं हो सकती, आज उन्हीं मूल्यों को अपनाने की आवश्यकता है जिससे शिक्षार्थी सीखें ज्ञान को स्थायी रूप से धारण कर सके और यथावसर उसका प्रयोग कर सकें। हमारे प्राचीन ग्रंथ एवं साहित्य प्रमाणित करते हैं कि प्राचीन काल में केवल श्रद्धा, ज्ञान, भक्ति और कर्म के द्वारा ही प्राप्त ज्ञान को आजीवन धारण करने में व्यक्ति सक्षम होता था। उन्ही प्राचीन ग्रंन्थों में श्रीमद्भगवद्गीताधारित ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग एवं ध्यानयोग के शैक्षिक मूल्यों को शैक्षिक प्रक्रिया में प्रयोग करने की वर्तमान में आवश्यकता है।

समस्या का प्रदुर्भाव–

वर्तमान समय में हम सभी पाश्चात्य शिक्षा की ओर भाग रहे हैं। भारत आदिकाल से शिक्षा का मुख्य केंद्र रहा है हम आज जिसे ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक विकास कहते हैं गीता अपनी विषय वस्तु का आरंभ एवं अंत इसी से करता है। श्रीमद्भगवद्गीता पर विभिन्न पक्षों पर अनेक शोध हुए जिनमें– गुप्ता, श्री मती निवेदिता (1983), ने अपने शोध ''गीता, कांट और विवेकानंद के नीति दर्शन में ज्ञान और कर्म का समन्वय'' में पाया कि गीता विश्व का एक अमर ग्रंथ है। गीता का तत्वज्ञान उपनिषदों से मिलता है। आधुनिक युग में लोकमान्य तिलक ने गीता रहस्य के द्वारा कर्मयोग की प्रधान व्याख्या की। गीता वह महाद्वार है जिसमें से समस्त आध्यात्मिक सत्य, अनुभूति जगत की सीढ़ी होती है और हम उसी सीढ़ी से चढ़कर इस दिव्य अनुभूति को प्राप्त करते हैं। जिस प्रकार राजा की आज्ञा का पालन या उल्लंघन करने पर प्रजा को ही सुख या दुख होता है, उसका भागीदार राजा नहीं होता है, उसी तरह भौतिक और मानसिक जगत के परिवर्तनों का ईश्वर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसी दृष्टि को गीता स्वीकार करती है।

गौतम, सौम्या. (1992). ने अपने शोध ''श्रीमद्–भगवद् गीता में शिक्षा प्रकरण (निर्देशन एवं परामर्श के विशेष सन्दर्भ में)'' में पाया कि महाभारत में असंख्य ऐसे स्थल हैं जहां पर विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए अनेक विधियों से परामर्श की प्रक्रिया संपन्न की गई है, जैसे विदुर द्वारा राजा धृतराष्ट्र को परामर्श। गीता में कृष्ण परामर्शदाता की भांति समय–समय पर अर्जुन को निर्देशन व परामर्श देते हैं। गीता में अर्जुन एक सच्चा जिज्ञासु है जो प्रत्येक तथ्य को वास्तव में गृहण करना चाहता है। शिक्षा का लक्ष्य मानव को उस

अज्ञान से मुक्त कराना है जो भेद को पैदा करने वाला है तथा आत्मानुभूति के मार्ग में बाधक है, गीता मानवमात्र के कल्याण के लिए श्रेष्ठ ग्रंथ है। योगिता. (1995). ने अपने शोध ''अष्टावक्र गीता एक समालोचनात्मक अध्ययन'' में पाया कि अष्टावक्र के महान दर्शन में भगवद्गीता के समान ही कुछ सीमा तक उपनिषदों के सिद्धांत मिलते हैं। उपनिषदों से आगे बढ़कर अष्टावक्र संसार के अनुभवों द्वारा आत्मा की एकत्व और सर्व व्याप्त की स्थापना करते हैं। अनासक्ति का उपदेश गीता और अष्टावक्र दोनों में दिया गया है। अष्टावक्र जिस आत्मा की सत्ता को स्वीकार करते हैं वह निर्गुण हैं, कोई भी सांसारिक संबंध और अनुभव आत्मा को पूर्णत्व और परमार्थ से गुण और व्यवहार में ले जाते हैं। शरीर स्थूल है सृष्टि भी स्थूल है किन्तु इसके भीतर में जो सूक्ष्म तत्व है वह प्रत्यक्ष नहीं होता है। भौतिक वासना में फंसा हुआ मन उसे इतना विचलित कर देता है कि मनुष्य आत्मा को ही भूल जाता है। उपाध्याय, प्रतिभा. (2002). ने अपने शोध ''श्रीमद्भागवत गीता के मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक निहितार्थ'' में पाया कि मनुष्य जीवन के लिए विश्वबंधुत्व की प्ररेणा के लिए उचित आदर्श की आवश्यकता है और योगेश्वर श्रीकृष्ण ने गीता में मनुष्य जाति को यह आदर्श दर्शाया है। गीता को यदि दिव्य ज्ञान का स्रोत कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। पाशविक प्रवृत्ति से निवृत्त होकर मानवता को प्राप्त करना गीता का मुख्य ध्येय है। मानवता ईश्वर को अत्यन्त प्रिय है। श्रीमद्भागवत गीता द्वारा प्रदान की गई शिक्षा आज भी किसी न किसी रूप में विद्यमान है, जो संपूर्ण मानव जाति को शिक्षार्थी मानकर संपूर्ण समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयास करता है।

देवी, अर्चना. (2010). ने अपने शोध ''अस्तित्ववादी दर्शन एवं गीता दर्शन में मानव की अवधरणा'' में पाया कि मनुष्य का अर्थ है मनन करना, इस दृष्टि से मनन शक्ति मनुष्य की बौद्धिक संपदा है इसीलिए मनुष्य सन्त बनने के लिए बेचैन रहता है और अन्य प्राणियों की भांति उसी में रहना कतई पसंद नहीं करता यही कारण से मनुष्य के जीवन कौशल में उत्तरोत्तर विकास होता रहता है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश अपने स्वभाव के कारण प्रकाश फैलाने के लिए विवश है वह चाह कर भी अंधेरा नही बिखेर सकता उसी प्रकार संत और सज्जन पुरुष लोकहित में निरंतर निरत रहते हैं। जीवन कर्मदर्शन है, गीता के मर्म को जीवन में खोजने की जरूरत है। पराधीनता की धूल और बाजारवादवादी आंधी जब नष्ट हो जाएगी तब आत्मा का

स्वधर्म प्रकट हो जाएगा। गीता योग पर आधारित दर्शन है इसलिए वह मात्र संभावनाओं की चर्चा नहीं करता बल्कि यथार्थ की बात करता है।

गोयल, प्रदीप कुमार. (2014). ने अपने शोध ''गीता में प्रेरणात्मक संचार का अध्ययन'' में पाया कि श्रीमद्भगवद्गीता की मुख्य शिक्षा कर्म की प्रेरणा देना है, जिज्ञासा संतुष्ट के बाद व्यक्ति अंतिम निर्णय पर पहुंच जाता है, जैसे अर्जुन पहुंच गया और युद्ध करने के लिए तैयार हो गया। मानव केवल उपयोगितावादी नहीं होता बल्कि अपने तर्क के आधार पर संतुष्ट भी होता है। व्यक्ति को भगवान जैसा सम्मान देना कोई मामूली मनोवैज्ञानिक प्रभाव नहीं है बल्कि वह बड़ा प्रभावकारी तत्व है जो सम्मानित सत्ता के प्रति समर्पित होने में प्रकट होता है इसी सम्मान भावना के कारण अर्जुन श्रीकृष्ण की प्रत्येक बात को मानते हैं। जीवन के लौकिक क्षेत्रों में यह बात आज भी दिखलाई पड़ती है जब कर्मचारी अधिकारियों के निर्देश का पालन उनके प्रति सम्मान भाव के कारण करते हैं चाहे वह उनसे सहमत हो या न सहमत हो।

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा– यह पक्ति भी कर्म की सांसारिक आधारिकता सिद्ध करती है। भगवद्गीता समूचे विश्व के लिए शांति, सद्भाव, समता और कर्म की अनूठी प्रेरणा देती है। गुप्ता, नीजू. (2016). ने अपने शोध ''गीता में कर्मयोग–निष्काम कर्म एवं कर्मवाद एक तुलनात्मक अध्ययन'' में पाया कि वर्तमान युग में शिक्षित पुरुष जिस कर्म वाद के पीछे आकृष्ट हैं उन्हें आध्यात्मिक विषयों का ज्ञान नहीं है केवल भौतिक जीवन को आदर्श मानकर विदित विविध कार्यों में संलिप्त हैं उनके लिए गीता का उपदेश अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होता है श्रीकृष्ण ने आत्मज्ञान, भक्ति, कर्म, ध्यान, समाधि, आदि अनेक विषयों पर उपदेश दिया है और कई तरह से सावधान रहने हेतु प्रेरित किया है।

शोधार्थी को विद्यार्थी काल में गीता से संबंधित कई पुस्तके **'गीता रहस्य, गीता–प्रवचन एवं भारतीय दर्शन'** के पढ़ने का भी अवसर प्राप्त हुआ और इसके साथ ही मानव संसाधन विकास मंत्रालय की केन्द्रीय योजना **PMMMNMTT** (शिक्षक एवं शिक्षण पर पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय मिशन) **School of Education (SoE)** प्रोजेक्ट दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट शिक्षा विभाग में आने से इस विषय पर और भी चिन्तन करने का अवसर प्राप्त हुआ। जिसमें **C-KART (Centre for. Knowledge, Acquisition, Retention and**

Transformation) के अन्तर्गत ध्यान एवं योग की क्रियाओं की दृष्टि से श्रीमद्भगवद्गीता का योग-दर्शन ध्यातव्य है। यदि शिक्षा के विभिन्न आयामों में श्रीमद्भगवद्गीता के कर्म सिद्धान्त अर्थात ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग एवं ध्यानयोग का समावेश किया जाये तो सम्भवतः विद्यार्थी की ज्ञानार्जन, धारण एवं स्थानान्तरण प्रक्रिया प्रभावी हो सकती है। जिसे आज हम ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक विकास की संज्ञा देते है वे श्रीमद्भगवद्गीता के ज्ञानयोग, भक्तियोग एवं कर्मयोग का ही पर्याय प्रतीत होते है उपर्युक्त साहित्याध्ययन के आधार पर शोधार्थी के मनोमस्तिष्क में कुछ शैक्षिक प्रश्नों का प्रादुर्भाव होना स्वाभाविक है **यथा–**

1. श्रीमद्भगवद्गीता के योग-दर्शन आधारित शिक्षा, शिक्षार्थियों में ज्ञानार्जन क्षमता विकसित करने में किस प्रकार सहायक होगी ?
2. श्रीमद्भगवद्गीता के योग-दर्शन आधारित शिक्षा, शिक्षार्थियों की धारण क्षमता विकसित करने में किस प्रकार सहायक होगी ?
3. श्रीमद्भगवद्गीता के योग-दर्शन आधारित शिक्षा, शिक्षार्थियों को परिणाम की अपेक्षा कर्म के प्रति प्रेरित करने में किस प्रकार सहायक होगी ?
4. श्रीमद्भगवद्गीता के योग-दर्शन आधारित शिक्षा, वर्तमान सन्दर्भ में किस प्रकार प्रासंगिक होगी ?

इन्ही कुछ गुणात्मक प्रश्नों के समाधानार्थ शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध-समस्या का चयन किया है।

अध्ययन का औचित्य–

श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत का एक अंश है जिसमें जगदगुरू श्री कृष्ण द्वारा शिष्य के प्रतीक के रूप में अर्जुन को शिक्षा दी गई है। शिक्षा दर्शन की दृष्टि से गीता अमूल्य निधि है क्योंकि इसमें सभी प्रचलित दार्शनिक मान्यताओं तथा सिद्धांतों का समाहार मिलता है। श्रीमद्भगवद्गीता का मुख्य उद्देश्य लोक कल्याण है। वर्तमान युग में मानव स्वार्थ की भावना से प्रभावित होकर निजी लाभ के संबंध में सोचता है किन्तु गीता

मानव को निर्देशित कर परार्थ–भावना का विकास करने हेतु प्रेरित करती है। **महात्मा गांधी ने भी गीता को प्रेरणा का स्रोत कहा है सिन्हा, (2018)।**

श्रीमद्भगवद्गीता पर अनेक शोधकार्य हुए जिसमें शोधार्थी द्वारा चयनित शोध समस्या से संबंधित प्राप्त शोध निम्नलिखित है–

क्र. सं.	**शोधकर्ता**	**वर्ष**	**शोध अध्ययन का विषय**
01	भट्ट एस. एन. आर.	1993	*गीता, बाइबिल एवं कुरान का तुलनात्मक अध्ययन ।*
02	देवी, ए	2010	*अस्तित्ववादी दर्शन एवं गीता दर्शन में मानव की अवधरणा।*
03	गौतम, एस.	1992	*श्रीमद्–भगवद् गीता में शिक्षा प्रकरण (निर्देशन एवं परामर्श के विशेष सन्दर्भ में) ।*
04	गोस्वामी, एन.	2015	*अष्टावक्र गीता' में निहित दार्शनिक तत्वों की वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता।*
05	गोयल, पी. के.	2014	*गीता में प्रेरणात्मक संचार का अध्ययन ।*
06	गुप्ता, एन.	2006	*गीता में कर्मयोग–निष्काम कर्म एवं कर्मवादः एक तुलनात्मक अध्ययन ।*
07	गुप्ता, एन.	1983	*गीता, कांट और विवेकानंद के नीति दर्शन में ज्ञान और कर्म का समन्वय ।*
08	जीवा, जे.वी., एण्ड ग्रेस. एल. एफ. एम.	2017	*डिकोडिग द भगवद् गीता टू दि प्रजेन्ट कॉटेक्स।*
09	काबा, ए., एण्ड रामाइह, सी. के.	2019	*मेजरिंग नॉलेज ऐक्विजिशन एंड नॉलेज क्रिएशन ए रिव्यू ऑफ लिटरेचर वन।*
10	कोसर, जी., एण्ड बेदिर एच.	2018	*इंप्रूविंग नॉलेज रिटेंशन वी आई ए एस्टेब्लिशिंग ब्रेन बेस्ड लर्निंग एनवायरमेंट।*
11	पाण्डेय, बी.	2007	*वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गीता दर्शन के शैक्षिक निहितार्थ का समालोचनात्मक अध्ययन।*
12	रानी, पी.	2013	(2013). द इफेक्ट ऑफ भगवद्गीता इन दि प्रजेन्ट सेनारियो ऑफ एजुकेशन।
13	साहनी, एन., एण्ड राव, एस.	2017	*आईडेंटिफाई एलिमेंट्स ऑफ द कोड ऑफ प्रोफेशनल एथिक्स फॉर टीचर्स इन दि भगवद् गीता।*
14	टोकलूकू, एस. के., एण्ड टाय, बी.	2016	*एण्ड द इफेक्ट ऑफ कोऑपरेटिव लर्निंग मेथड एंड सिस्टमैटिक टीचिंग ऑन स्टूडेंट्स अचीवमेंट एंड रिटेंशन ऑफ नॉलेज इन सोशल स्टडीज लेशन।*
15	उपाध्याय, पी.	2002	*श्रीमद्भागवत गीता के मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक निहितार्थ।*
16	योगिता	1995	*अष्टावक्र गीता एक समालोचनात्मक अध्ययन।*

श्रीमद्भगवद्गीता पर प्राप्त शोध जिसमें गीता का तुलनात्मक अध्ययन कुरान और बाईबिल से किया गया है, अस्तित्वादी दर्शन एवं गीता दर्शन में मानवीय अवधारणा पर शोध किया गया है। श्रीमद्भगवदगीता का

निर्देशन एवं परामर्श के परिप्रेक्ष्य में शोध प्राप्त हुए हैं। अष्टावक्र गीता के दार्शनिक पक्ष में शोध हुए हैं। श्रीमद्भगवद्गीता, कांट एवं विवेकानंद के नैतिक दर्शन में कर्म एवं ज्ञान के साथ संबंधों का अध्ययन हुआ है। वर्तमान परिवेश में गीतादर्शन के शैक्षिक निहितार्थ पर शोध हुए हैं। श्रीमद्भगवद्गीता का मनोवैज्ञानिक आधार पर शोध प्राप्त हुए हैं परन्तु श्रीमद्भगवद्गीता के योगदर्शन जिसमें ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग एवं ध्यानयोग समाहित है पर शिक्षण से संबंधित विभिन्न पक्षों पर शोध शोधार्थी द्वारा नहीं प्राप्त हुए हैं इसलिए शोधार्थी ने श्रीमद्भगवद्गीता के योगदर्शन के शैक्षिक निहितार्थों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ज्ञानार्जन, धारण एवं स्थानांतरण प्रक्रिया के संदर्भ में शोध कार्य के लिए शोध समस्या का चयन किया। वर्तमान में शिक्षाविदों का ध्यान इस बात पर विशेष रूप से आकर्षित हुआ है कि विद्यार्थियों की ज्ञानार्जन, धारण एवं स्थानान्तरण प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावी बनाया जाय? इसमें योग प्रक्रिया को शिक्षाविदों ने एक सशक्त माध्यम के रूप में स्वीकार कर पाठ्यक्रम में समावेशित करने का समर्थन किया है। इस दृष्टि से श्रीमद्भगवद्गीता के योगदर्शन का शिक्षा में समावेशण यथोचित सिद्ध होगा।

वर्तमान समय में केंद्र सरकार जिस प्रकार कौशल विकास जैसे कार्यक्रमों पर ध्यान दे रही है जिसमें ज्ञानार्जन, धारण एवं अर्जित ज्ञान को कर्म क्षेत्र में प्रयोग करने पर जोर दिया जा रहा है, इसके लिए विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण भी दिए जा रहे हैं। श्रीमद्भगवद्गीता जिसका प्रारम्भ ही कर्म क्षेत्र से होता है, इसलिए यदि श्रीमद्भगवद्गीता के योगदर्शन के शैक्षिक मूल्यों के आधार पर शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण प्रक्रिया को निर्धारित किया जाये तो निश्चित ही शिक्षार्थी की ज्ञानार्जन क्षमता, ज्ञान के धारण की क्षमता एवं अपने कर्म क्षेत्र में प्रयोग करने में सफल होगा।

समस्या कथन– श्रीमद्भगवद्गीता में निहित योग-दर्शन के शैक्षिक निहितार्थों की ज्ञानार्जन, धारण एवं स्थानान्तरण प्रक्रिया के सन्दर्भ में समसामयिक प्रासंगिकता।

शोध समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या–

श्रीमद्भगवद्गीताधारित योग-दर्शन– श्रीमद्भगवद्गीताा के अनुसार– ''**योगः कर्मसु कौशलम् अर्थात कर्म करने की एक प्रकार की विशेष युक्ति को योग कहते हैं।''**

क्रियात्मक परिभाषा– प्रस्तुत शोध में श्रीमद्भगवद्गीता आधारित योग-दर्शन से अभिप्राय श्रीमद्भगवद्गीता में समाविष्ट ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग एवं ध्यानयोग से है।

शैक्षिक निहितार्थ– वुड. (2008). के अनुसार–'' वह अवसर जो विभिन्न संज्ञानात्मक स्तरों के शिक्षार्थियों को एक साथ काम करने की अनुमति देते है वे अक्सर कम परिपक्व छात्रों को उच्च समझ के लिए प्रोत्साहित करने में मदद् करते है। छात्रों को भविष्य में स्वयं से करके सीखने का निर्देश मिलता है।''

क्रियात्मक परिभाषा– प्रस्तुत शोध में शैक्षिक निहितार्थ से अभिप्राय श्रीमद्भगवद्गीताा‍धारित शिक्षा के विभिन्न आयामों से हैं जिसमें शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षणविधि, छात्र–शिक्षक सम्बन्ध, अनुशासन, विद्यालय एवं निर्देशन एवं मूल्यांकन प्रणाली से है।

ज्ञानार्जन प्रक्रिया– डीवी, जे. (1916). के अनुसार– ''केवल वही ज्ञान ही वास्तविक है जो हमारी प्रकृति में संगठित हो गया है, जिससे हम पर्यावरण को अपनी आवश्यकताओं के अनुकूल बनाने में समर्थ हो सके और अपने आदर्शों तथा इच्छाओं को उस स्थिति के अनुकूल बना ले जिसमें कि हम रहते हैं।''

क्रियात्मक परिभाषा–प्रस्तुत शोध में ज्ञानार्जन प्रक्रिया से अभिप्राय श्रीमद्भगवद्गीता के शैक्षिक विचारों के आधार पर विभिन्न तथ्यों, स्वयं सिद्धियों, सिद्धान्तों एवं मान्यताओं आदि को प्रभावी ढ़ग से सीखने एवं ग्रहण करने से है, जो वर्तमान शैक्षिक प्रक्रिया में आवश्यक है।

धारण प्रक्रिया– वुडवर्थ, आर. एस. (1932).के अनुसार– ''धारण वह शक्ति है जिसमें सीखी गयी बातें पुनः सक्रिय होने तक निष्क्रिय पड़ी रहती है।''

क्रियात्मक परिभाषा– प्रस्तुत शोध में श्रीमद्भगवद्गीताा‍धारित धारण प्रक्रिया से तात्पर्य अर्जित ज्ञान को अपने अन्तःकरण में यथावसर प्रयोग हेतु धारण करने से है।

स्थानान्तरण प्रक्रिया– स्लेविन, आर. ई. (1991). ने कहा है ''शिक्षण अंतरण का अर्थ है एक परिस्थिति में अर्जित ज्ञान का उपयोग नई परिस्थितियों में करना।''

क्रियात्मक परिभाषा– प्रस्तुत शोध मे श्रीमद्भगवद्गीतााधारित स्थानान्तरण प्रक्रिया, जब व्यक्ति समुचित रूप से तथ्यों, सिद्धान्तों, ज्ञान व कौशल आदि को जो वर्तमान शैक्षिक प्रक्रिया में आवश्यक है को अंतः धारण कर लेता है तो निश्चित रूप से उसे यथावसर उपयोग करने में सक्षम होता है।

उपयुक्त तीनों ही शब्द (ज्ञानार्जन, धारण एवं स्थानान्तरण) सापेक्षिक शब्द है।

समसामयिक प्रासंगिकता–

क्रियात्मक परिभाषा–

प्रस्तुत शोध में समसामयिक प्रासंगिकता का अर्थ वर्तमानकालिक उपादेयता से है। जिसमें श्रीमद्भगवद्गीताधारित शैक्षिक निहितार्थों को वर्तमान शैक्षिक प्रक्रिया में आवश्यकतानुसार समाहित करने से है। अर्थात प्रस्तुत शैक्षिक दर्शन का अद्यतन समाज की वैचारिक स्थिति के साथ अनुकूलन से है।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. श्रीमद्भगवद्गीता में निहित योग-दर्शन का अध्ययन करना।
2. श्रीमद्भगवद्गीता में समाविष्ट ज्ञान, भक्ति, कर्म एवं ध्यान योग संबंधित विषयवस्तु का चयन करना।
3. श्रीमद्भगवद्गीता के योग-दर्शन आधारित शैक्षिक निहितार्थो का निरूपण करना।
4. श्रीमद्भगवद्गीता के योग-दर्शन आधारित शैक्षिक निहितार्थों के ज्ञानार्जन, धारण एवं स्थानान्तरण प्रक्रिया में योगदान का अध्ययन करना।
5. समसामयिक प्रासंगिकता की दृष्टि से श्रीमद्भगवद्गीता में निहित योग-दर्शन आधारित शैक्षिक निहितार्थों का विवेचन करना।

अध्ययन का परिसीमांकन– प्रस्तुत शोध श्रीमद्भगवद्गीता के अट्ठारह अध्यायो में से उन श्लोको का चयन किया जायेगा जिनकी वर्तमान में शैक्षिक दृष्टि से प्रासंगिकता है।

अध्ययन की विधि– प्रस्तुत शोध अध्ययन में गुणात्मक शोध के अन्तर्गत विषय वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन में प्रयुक्त प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत– प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक स्रोत के रूप में स्वामी प्रभुपाद द्वारा अनूदित 'श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप' नामक पुस्तक को आधार बनाया जायेगा।

द्वितीयक स्रोत के रूप में श्रीमद्भगवद्गीता से सम्बन्धित अन्य पुस्तकों पत्रिकाओं एवं स्रोतों को सम्मिलित किया जायेगा।

अध्ययन की प्रक्रिया– अध्ययन प्रक्रिया के निम्नलिखित सोपान है–

'श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप' नामक पुस्तक का अध्ययन करना।

↓

अध्ययनोपरान्त योग.दर्शन के विभिन्न पक्षों यथा ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग और ध्यानयोग सम्बन्धी श्लोकों का चयन किया जायेगा जिनकी शैक्षिक दृष्टि से महती उपादेयता है।

↓

उन श्लोको के आधार पर शिक्षा के विभिन्न पक्षों यथा शिक्षा के उद्देश्य, पाठयक्रम, शिक्षण प्रक्रिया, अनुशासन, विद्यालय का वातावरण, निर्देशन आदि बिन्दु का निरूपण किया जायेगा।

↓

श्रीमद्भगवद्गीताधारित शैक्षिक निहितार्थो की ज्ञानार्जन, धारण एवं स्थानान्तरण प्रक्रिया की दृष्टि से उपादेयता का प्रस्तुतीकरण किया जायेगा।

↓

श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक निहितार्थो की ज्ञानार्जन, धारण एवं स्थानान्तरण प्रक्रिया की दृष्टि से समसामयिक प्रासंगिकता का विवेचन किया जायेगा।

चित्र संख्या 03 अध्ययन की प्रक्रिया

अध्ययन की सार्थकता–

भारतीय शिक्षा का आरंभ प्रकृति की गोद में हुआ, जिसमें मूलभूत जिज्ञासा की शांति गुरुकुल में मिलती थी। प्राचीन काल में अध्यात्मिकता से ही नैतिक, सामाजिक, सास्कृतिक, राजनीतिक, एवं आर्थिक, धाराएं पल्लवित हुई। सत्य, प्रेम, करुणा, दया, निःस्वार्थ भाव से कर्म आदि पर ही सामाजिक जीवन की नींव रखी गई। वर्तमान परिस्थितियों में श्रीमद्भगवद्गीता में सभी दर्शनों की विचारधाराओं का निचोड़ मिलता है जो प्राचीन काल में ही नहीं अपितु वर्तमान काल में भी महत्वपूर्ण एवं अनुकरणीय है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति को शिखर पर ले जाने की आवश्यकता है।

ऐसी शैक्षिक शोधन प्रक्रिया जो व्यक्तियों में सद्गुणों का विकास करें। व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास एवं अंतिम लक्ष्य आत्मानुभूति की प्राप्ति की जा सके। श्रीमद्भगवद्गीता हमें कर्मठ एवं कर्मों में कुशलता का योगात्मक पाठ पढ़ाती है। आज मनुष्य भौतिक जगत में शिक्षित होकर भी प्राणी मात्र बनकर रह गया है उसमें प्रेम, शांति, मानवसेवा, त्याग आदि मानवीय मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है।

श्रीमद्भगवद्गीता ऐसा ग्रंथ है जिसका प्रारंभ ही कर्म क्षेत्र/प्रयोग क्षेत्र से होता है श्रीमद्भगवद्गीता में श्रद्धा भक्ति से कर्म करने की प्रेरणा, अनुशासन एवं शांति का वातावरण स्थापित करना, संयमित जीवन जीने की कला, इंद्रियों पर नियंत्रण, उद्देश्य पूर्ण ज्ञान का संकलन एवं धारण, कर्म क्षेत्र में उसका प्रयोग, निःस्वार्थ भाव से कर्म की प्रेरणा करुणा, प्रेम एवं मानवता संबंधी मूल्यों को जागृत करना, सांस्कृतिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन, भौतिक एवं आध्यात्मिक का समन्वय, नैतिक मूल्यों का समावेश, गुरु का शिष्य के प्रति प्रेम एवं उत्तरदायित्व और शिष्य का गुरु के प्रति श्रद्धा, विश्वास एवं सम्मान, आत्मनियंत्रण, प्रत्येक कार्य में ईश्वर को समर्पित, गुरु के प्रति समर्पित, लक्ष्यकेंद्रित जीवन शैली, मन की एकाग्रता, ज्ञानात्मक (ज्ञानयोग), भावात्मक (भक्तियोग), क्रियात्मक (कर्मयोग) और संयमित जीवन (ध्यानयोग) के अनुरूप कार्यों में निपुणता, सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया के भाव से ओतप्रोत, विश्व बंधुत्व की भावना का विकास जिससे शांति, ज्ञान, समृद्धि से देदीप्यमान राज्य स्थापित हो सके।

शिक्षा का उद्देश्य और पाठ्यक्रम ऐसा हो जिसमें शिक्षार्थी के ज्ञानार्जन, धारण एवं स्थानांतरण इस प्रकार से हो जिससे कि उनके कौशलों का विकास उत्कृष्टता के साथ हो सके।

वर्तमान समय में व्यक्तियों में आलस्य, कायरता, अध्यात्मिक उदासीनता, निरंकुशता, क्रोध, आवेश, सामंजस्य का अभाव, प्रतिशोध की भावना, अधिक सोना, अधिक खाना, चंचलता, शरीर, मन तथा आत्मा की अपवित्रता, विनाशकारी प्रवृत्ति, निर्दयता, क्रूरता, वासना, अहंकार आदि दुर्गुण बढ़ते जा रहे है जिन्हें निम्नतम स्तर पर लाने की आवश्यकता है और जिसका समाधान श्रीमद्भगवद्गीता के योग-दर्शन में निहित मूल्यों से किया जा सकता है।

व्यक्ति जन्मजात पशु होता है मानव की कोटि में लाने का आधार ज्ञानार्जन प्रक्रिया है आज बालक को प्रारम्भ से ही भौतिक एवं अन्य विकास के पक्षों का प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष ज्ञान प्रदान करने का प्रयास किया जाता है। बालक धीरे–धीरे स्वयं ज्ञानार्जन प्रक्रिया में संलग्न हो जाता है किन्तु आवश्यकता इस बात की है कि व्यक्ति की ज्ञानार्जन की प्रक्रिया को बेहतर कैसे बनाया जाये। मात्र ज्ञानार्जन ही नहीं अपितु उस प्राप्त ज्ञान को व्यक्ति स्वयं धारण करें। अर्थात ज्ञानार्जित तथ्यों का स्मरण करें एवं अपने व्यावहारिक जीवन में यथावश्यक ज्ञान का स्थानान्तरण भी कर सकें। इसके लिए व्यक्ति में श्रद्धा, कर्म एवं ध्यान की आवश्यकता है जिससे प्राप्त ज्ञान में स्थायित्व आ सके।

अध्ययन योजना–

- प्रथम अध्याय– अध्ययन की पृष्ठभूमि।
- द्वितीय अध्याय– सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण।
- तृतीय अध्याय– श्रीमद्भगवद्गीताधारित योग-दर्शन एवं शैक्षिक निहितार्थ सम्बन्धी विषयवस्तु का चयन।
- चतुर्थ अध्याय– श्रीमद्भगवद्गीताधारित योग-दर्शन सम्बन्धी विषयवस्तु का शैक्षिक निहितार्थों के सन्दर्भ में विश्लेषण।

- पंचम् अध्याय— श्रीमद्भगवद्गीताधारित शैक्षिक निहितार्थो की ज्ञानार्जन, धारण एवं स्थानान्तरण प्रक्रिया की दृष्टि से विवेचन।
- षष्टम् अध्याय— श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक निहितार्थो की ज्ञानार्जन, धारण एवं स्थानान्तरण प्रक्रिया की दृष्टि से समसामयिक प्रासंगिकता का विवेचन।
- सप्तम् अध्याय— निष्कर्ष एवं सुझाव।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची—

1. भट्ट एस. एन. आर. (1993). *गीता, बाइबिल एवं कुरान का तुलनात्मक अध्ययन* (प्रकाशित शोध प्रबन्ध, दर्शन शास्त्र). काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर. *वाराणसी.* retrieved from http://hdl.handle.net/10603/178602
2. देवी, ए. (2010). *अस्तित्ववादी दर्शन एवं गीता दर्शन में मानव की अवधरणा* (प्रकाशित शोध प्रबन्ध, दर्शन शास्त्र). डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद. फैजाबाद. retrieved from http://hdl.handle.net/10603/247848
3. डीवी, जे. (1916). *डेमोक्रेसी एण्ड एजुकेशन.* न्यूयार्कः मैकमिलन.
4. गौतम, एस. (1992). *श्रीमद्—भगवद् गीता में शिक्षा प्रकरण (निर्देशन एवं परामर्श के विशेष सन्दर्भ में)* (प्रकाशित शोध प्रबन्ध, शिक्षा शास्त्र). मेरठ विश्वविद्यालय. मेरठ
5. गोस्वामी, एन. (2015). *'अष्टावक्र गीता' में निहित दार्शनिक तत्वों की वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता* (प्रकाशित शोध प्रबन्ध, शिक्षा शास्त्र).दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग. आगरा. retrieved from **http://hdl.handle.net/123456789/2550**
6. गोयल, पी. के. (2014). *गीता में प्रेरणात्मक संचार का अध्ययन* (प्रकाशित शोध प्रबन्ध,शैक्षिक संचार संकाय). कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय. कुरुक्षेत्र (हरियाणा). retrieved from http://hdl.handle.net/10603/75412

7. गुप्ता, एन. (2016). *गीता में कर्मयोग–निष्काम कर्म एवं कर्मवादः एक तुलनात्मक अध्ययन* (प्रकाशित शोध प्रबन्ध, संस्कृत विभाग). झारखण्ड राय विश्वविद्यालय. राँची

8. गुप्ता, एस. पी., एवं गुप्ता, एल. (2015). *अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि.* (सं संस्करण 2015). इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन.

9. गुप्ता, एस. पी., एवं गुप्ता, एल. (2018). *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्वान्त एवं व्यवहार.* (सं. संस्करण 2018). इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन

10. .गुप्ता, एन. (1983). *गीता, कांट और विवेकानंद के नीति दर्शन में ज्ञान और कर्म का समन्वय* (प्रकाशित शोध प्रबन्ध, दर्शन शास्त्र). रविशंकर विश्वविद्यालय. रायपुर.

11. जीवा, जे.वी., एण्ड ग्रेस. एल. एफ. एम. (2017). डिकोडिग द भगवद् गीता टू द प्रजेन्ट कॉटेक्स. *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च ग्रंथालय.* Vol. 5, 4, ISSN 2350-0530 DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.569370

12. काबा, ए., एण्ड रामाईह, सी. के. (2019)मेजरिंग नॉलेज ऐक्विजिशन एंड नॉलेज क्रिएशन ए रिव्यू ऑफ लिटरेचर वन, *ए. ए. यू. जर्नल आफ बिजनेस एंड ला, एंड इंटरनेशनल एकेडमी रेफरीड जनरल,* ISSN: 2521-439x, Retrieved from https://www.researchgate.net/publication/332640350

13. कोसर, जी., एण्ड बेदिर एच. (2018) इंप्रूविंग नॉलेज रिटेंशन वी आई ए एस्टेब्लिशिंग ब्रेन बेस्ड लर्निंग एनवायरमेंट. *यूरोपीयन जर्नल आफ एजुकेशन स्टडीज .* Vol,4,9, ISSN: 2501-1111, Retrieved from www.oapub.org/edu

14. लाल, आर. बी. (2016). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त.* (अठारहवां संस्करण 2016). मेरठः रस्तोगी पब्लिकेशन्स.

15. पाण्डेय, बी. (2007). *वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गीता दर्शन के शैक्षिक निहितार्थ का समालोचनात्मक अध्ययन* (प्रकाशित शोध प्रबन्ध, शिक्षा शास्त्र). बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय. झाँसी. retrieved from http://hdl.handle.net/10603/10746

16. राधाकृष्णन. (2017). *भारतीय दर्शन–1.* (संस्करण 2017). दिल्लीः राजपाल एण्ड सन्ज.

17. रानी, पी. (2013). द इफेक्ट ऑफ भगवद्गीता इन द प्रजेन्ट सेनारियो ऑफ एजुकेशन. *शोध संचयन,* Vol. 4, 2, ISSN 2249-9180 Retrieved from http://www.shodh.net

18. साहनी, एन., एण्ड राव, एस. (2017). आईडेंटिफाई एलिमेंट्स ऑफ द कोड ऑफ प्रोफेशनल एथिक्स फॉर टीचर्स इन द भगवत गीताः ए हरमेन्यूटिक स्टडी. *यूरोपीयन जर्नल आफ एजुकेशन स्टडीज.* Vol.3, 7, ISSN: 2501-1111, Retrieved from www.oapub.org/edu

19. शर्मा, सी. (2013). *भारतीय दर्शन आलोचना और अनुशीलन.* (सं. संस्करण 2013).दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास.

20. सिंघल, ए. (2006). *आधुनिक भारतीय परिप्रेक्ष्य में श्रीमद्भागवत गीता का शैक्षिक निहितार्थ एवं उसकी प्रासंगिकता का एक आलोचनात्मक अध्ययन* (प्रकाशित शोध प्रबन्ध, शिक्षा शास्त्र). बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय. झाँसी.

21. सिंह, एल. (2009). *सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के छात्रों की बुद्धि, स्मृति एवं सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन* (प्रकाशित शोध प्रबन्ध, शिक्षा शास्त्र). वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय. जौनपुर. retrieved from http://hdl.handle.net/10603/179106

22. श्री श्री पी. वाई. (2018). *ईश्वर-अर्जुन संवाद श्रीमद्भगवद्गीता.* (प्रथम सं. 2017). *कोलकाता :* योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इण्डिया.

23. सिंह, ए. के. (2018). *शिक्षा मनोविज्ञान.* (चतुर्थ सं. 2018). *पटनाः भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स).*

24. सिन्हा, एच. पी. (2018). *भारतीय दर्शन की रुपरेखा.* (तेरहवॉ संस्करण 2018). दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास.

25. स्लेविन, आर. ई. (1991). *एजुकेशनल साइकोलॉजी.* बोस्टन, लंदन. एलन एण्ड बेकन.

26. सुलैमान. (2014). *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान.* (तृ. सं. 2014). दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास.

27. स्वामी, पी. (1983). *श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप.* (द्वि. संस्करण 1983). मुम्बईः भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट.

28. तिलक, बी. जी. (2018). *गीता रहस्य.* (संस्करण 2018). नई दिल्लीः डायमंड पॉकेट बुक्स.

29. टोकलूकू, एस. के., एण्ड टाय, बी. (2016). एण्ड द इफेक्ट ऑफ कोऑपरेटिव लर्निंग मेथड एंड सिस्टमैटिक टीचिंग ऑन स्टूडेंट्स अचीवमेंट एंड रिटेंशन ऑफ नॉलेज इन सोशल स्टडीज लेशन. *यूरेशियन जनरल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च.* 66- 315-334 http://dx.doi.org/10.14689/ejer.2016.66.18

30. उपाध्याय, पी. (2002). *श्रीमद्भागवत गीता के मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक निहितार्थ* (प्रकाशित शोध प्रबन्ध, शिक्षा शास्त्र). डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय. फैजाबाद- retrieved from http://hdl.handle.net/10603/228938

31. विभा, (2007). *वर्तमान शिक्षण प्रशिक्षण के परिप्रेक्ष्य में गीता की व्यवहारिकता का समालोचनात्मक अध्ययन* (प्रकाशित शोध प्रबन्ध, शिक्षा शास्त्र). चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय. मेरठ. retrieved from http://hdl.handle.net/10603/54436

32. विनोबा, (2019). *गीता–प्रवचन.* (उनहत्तरवॉ संस्करण 2018). वाराणसीः सर्व सेवा संघ–प्रकाशन.

33. योगिता. (1995). *अष्टावक्र गीता एक समालोचनात्मक अध्ययन* (प्रकाशित शोध प्रबन्ध, संस्कृत विभाग). पंजाबविश्वविद्यालय. चण्डीगढ़.retrieved from http://hdl.handle.net/10603/134114